एही आहार आसिकन का, एही सोभा सिनगार।
झीलें सागर वाहेदत में, मेहेर सागर अपार।।७१ ।।

आशिक रूहों का यही आहार है कि वह श्री राजजी की शोभा और सिनगार के सागर में गर्क रहें। श्री राजजी के एकदिली के सागर में धनी की मेहर से झीलें और आनन्द लें।

महामत देखे विवेकसों, हक वस्तर और भूखन।
सब अंग सोभा अंगों की, ज्यों दिल रूह होए रोसन।।७२ ।।

श्री महामतिजी बड़े ध्यान से श्री राजजी महाराज के वस्त्रों और आभूषणों को देखती हैं, तो यह सब श्री राजजी के अंग के नूर की शोभा ही है, ऐसा दिल को पता लगता है।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ९९९ ।।

जोबन जोस मुख बीड़ी छबि

फेर फेर पट खोलें हुकम, निसबत जान रूहन।
हक मुख अंग इस्क के, ले देखिए अर्स अंग तन।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने रूहों को श्री राजजी की अंगना जानकर बार-बार अज्ञानता के परदे हटाए हैं। अब अर्श के अंगों से ही श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द और अंग दिल में इश्क लेकर देखो।

हक बरनन जिमी सुपने, हुकमें कह्या नेक सोए।
हक इस्क एक तरंग से, रूह निकस न सके कोए।। २ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन हुकम ने थोड़ा सा संसार में बताया है। इश्क की एक तरंग से ही रूह निकल नहीं सकती।

सुन्दर मुख मासूक का, और अंग सबे सुन्दर।
सो क्यों छूटे आसिक से, जब चुभे हैड़े अन्दर।। ३ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द और सभी अंग सुन्दर हैं, जो श्री राजजी महाराज की आशिक रूहों के दिल में चुभे रहते हैं, वह कैसे छूटेंगे।

क्यों कहूं मुख की सलूकी, और क्यों कहूं सुन्दरता।
ए आसिक जाने मासूक की, जिन घट लगे ए घा।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की बनावट और सुन्दरता कैसे कहूं? जिन रूहों को दिल में चोट लगी हो वही श्री राजजी महाराज के स्वरूप को जानती हैं।

मुख चौक सलूकी क्यों कहूं, कछू जानें रूह के नैन।
ए सुख सोई जानहीं, जासों हक करें सामी सैन।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की सम्पूर्ण शोभा का कैसे वर्णन करूं? यह रूहें ही अन्तर्दृष्टि से जानती हैं, क्योंकि इसकी लज्जत उन्हीं को मिलती है, जिनसे श्री राजजी महाराज इशारों से बातें करते हैं।

Nijanand App

सुख पाइए देखें हरवटी, मुख लांक लाल अधुर।
दन्त जुबां बीच तंबोल, मुख बोलत मीठा मधुर।। ६ ।।

श्री राजजी की हरवटी, मुखारबिन्द, लाल होंठ और हरवटी के बीच की गहराई, दांत, जबान तथा सुन्दर पान बीड़ा और मुखारबिन्द की मीठी वाणी सुखदायी हैं।

मुख मूंदे अधुर बोलत, बानी प्रेम रसाल।
आसिक को छबि चुभ रही, जानों हैड़े निस दिन भाल।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज रस भरी प्रेम वाणी मुंदे होठों से बोलते हैं। यह छबि रूहों के हृदय में चुभ जाती है, लगता है आशिक रूह के हृदय में यह भाले के समान रात-दिन चुभी रहती है।

सहूर कीजे हक अंग रंग, कई तरंग लाल उज्जल।
देत गौर सुख सलूकी, सोभा क्यों कहूं बिना मिसल।। ८ ।।

श्री राजजी के अंग के रंग का यदि आत्मदृष्टि से विचार करें तो उज्ज्वल लाल रंग की तरंगें दिखाई देंगी। अंग के गोरेपन और बनावट के सुख को बिना उपमा के कैसे वर्णन करूं?

हक मुखथें बोलें वचन, स्वर मीठा निकसत।
सो सुनत अर्स रूहों को, दिल उपजे हक लज्जत।। ९ ।।

श्री राजजी महाराज जब मुख से एक वचन बोलते हैं तो बहुत रसीली वाणी होती है। जिसे सुनकर परमधाम की रूहों को दिल में श्री राजजी महाराज की लज्जत मिलती है।

हक स्वर कैसा होएसी, और कैसी होसी मुख बान।
सुख बातें क्यों कहूं रसना, चाहे दिल सुनने सुभान।। १० ।।

श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द कैसा होगा? बोली कैसी होगी? बातें करते समय उनकी रसना के बेहद सुख कैसे कहे जाएं? यह रूहें उनको सुनने की चाहना रखती हैं।

हक नेक नैन मरोरत, होत रूहों सुख अपार।
तो बात कहें सुख हक के, सो क्यों कहूं सुख सुमार।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज जरा सी बांकी नजर से देख लेते हैं तो रूहों को बहुत सुख होता है। फिर श्री राजजी के सुख की ही बातें रूहें करती हैं, जो बेशुमार हैं। उसका वर्णन संसार में कैसे करूं?

एक रोम रोम हक अंग के, सब सुखै के अम्बार।
तो सुख सरूप नख सिखलों, रूहें कहा करें दिल विचार।। १२ ।।

श्री राजजी के अंग के रोम-रोम सुखों से भरपूर हैं, तो फिर नख से शिख तक पूरे स्वरूप के सुखों का रूहें कैसे अनुभव करें?

ज्यों रोम सुपन के अंग को, त्यों रोम न अर्स अंग पर।
सब अंग इस्क वास्ते, रोम रोम कहे यों कर।। १३ ।।

सपने के अंगों में जैसे रोम होते हैं, परमधाम के अंगों पर नहीं होते। परमधाम के सभी अंग श्री राजजी के इश्क के वास्ते ही हैं, इसलिए उन अंगों को रोम-रोम कहकर वर्णन किया है।

Nijanand App

अर्स पसु या जानवर, रोम होत तिन अंग।
रोम न रूहों अंग पर, रूहें अंग जानें अर्स नंग।। १४ ।।

परमधाम के पशु या जानवरों के अंग पर रोम (बाल) होते हैं, जो रूहों के अंग पर नहीं होते। रूहों के अंग परमधाम के नगों की तरह दिखाई देते हैं।

जवेर पैदा जिमीय से, यों अर्स में पैदा न होत।
ए खूबी हक जहूर की, सो लिए खड़ी सदा जोत।। १५ ।।

संसार में नग जमीन से पैदा होते हैं। परमधाम में ऐसी कोई चीज पैदा नहीं होती। यह सब खूबियां श्री राजजी महाराज के अंग के नूर की ही हैं जो सदा जगमगाती हैं।

याको नंग निमूना न दीजिए, अर्स रूहें वाहेदत।
इने मिसाल न कोई लागहीं, जाकी हक हादी जात निसबत।। १६ ।।

परमधाम की रूहों के तनों को नगों का नमूना न दें। यह रूहें परमधाम की एकदिली के स्वरूप हैं और श्री राजश्यामाजी के निसबती हैं। उनकी शोभा बताने के लिए कोई मिसाल नहीं है।

जो देऊं निमूना अर्स का, तो रूहों लगत न कोई बात।
रूहें अंग हादीय को, हादी अंग हक जात।। १७ ।।

अगर परमधाम का नमूना बताऊं तो रूहों को कोई उपमा नहीं लगती, क्योंकि रूहें श्री श्यामाजी के अंग हैं और श्यामाजी श्री राजजी के अंग हैं।

तिरछा नेक जो मुसकत, तो मार डारत मुतलक।
जो कदी सनमुख होए यों रूह सों, तो क्यों जीवे रूह आसिक।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज तिरछी मुस्कान से जरा भी देखते हैं तो निश्चित ही रूहें घायल हो जाती हैं। यदि श्री राजजी महाराज रूह के सामने ही मुस्करा दें तो फिर आशिक रूहें संसार में कैसे जिन्दा रह सकती हैं?

आसिक अटके सब अंगों, देख देख रूप सलूक।
एक नेक अंग के सुख में, रूह हो जात टूक टूक।। १९ ।।

आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के अंगों की सलूकी और रूप को देखकर अटक जाती हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज के अंग के जरा से सुख में रूहें गर्क हो जाती हैं।

सब अंग देखे रस भरे, प्रेम के सुख पूरन।
रूह सोई जाने जो देखहीं, ए पीवत रस मोमिन।। २० ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग मस्ती और प्रेम से भरे हुए हैं, जिनके सुख बेशुमार हैं। इसको वही रूहें समझ सकेंगी जो रात-दिन श्री राजजी का दीदार करती हैं और प्रेम रस का पान करती हैं।

गौर गाल मुख उज्जल, माहें गेहेरी लालक ले।
ए जुबां सुख सोभा क्यों कहे, अर्स अंग हक के।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज के गोरे गाल हैं। मुख उज्ज्वल है। गहरी लालिमा लिए है। इस शोभा को यहां की जबान कैसे कहे? यह श्री राजजी के परमधाम के अंग हैं।

Nijanand App

रूह आसिक जिन अंग अटकी, छूटत नहीं क्यों ए सोए।
ए किसी बातों आसिक सों, अंग मासूक जुदे न होए।। २२ ।।

आशिक रूहें श्री राजजी के जिस अंग को देखती हैं, वहीं अटक जाती हैं। फिर उनसे वह अंग किसी तरह से नहीं छूटता। आशिक रूहें ऐसी किसी बातों से श्री राजजी के अंग से जुदा नहीं हो सकतीं।

जेते अंग मासूक के, रूह आसिक रहे तिन माहें।
रूह आसिक और कहूं ना टिके, अपने अंग में भी नाहें।। २३ ।।

माशूक श्री राजजी के जितने भी अंग हैं, आशिक रूहें उसी में अटकी रह जाती हैं। ऐसी रूहों का ध्यान और कहीं नहीं टिकता। उन्हें अपनी भी सुध नहीं रहती।

करते बातें प्यारी मासूक, हाथ करें चलवन।
नेत्र भी वाही तरह, चूभ रेहेत रूह के तन।। २४ ।।

जब श्री राजजी महाराज प्यारी-प्यारी बातें, हाथों को चलाकर और उसी तरह से नेत्रों को घुमाकर, करते हैं, तो उनकी वह अदाएं रूह के तन में चुभी रहती हैं।

सब अंग हक के इस्क भरे, क्यों कर जाने जांए।
होए रूह जाग्रत अर्स की, ताए हुकम देवे बताए।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग इश्क से भरपूर हैं, उनको कैसे बताएं? परमधाम की रूह जब जागृत हो जाए तो श्री राजजी के हुकम से उसे यह सब बातें पता चल जाएंगी।

जब बात करें हक रूह सों, तब अंग सबे उलसत।
करते बातें छिपे नहीं, हक अंगों इस्क सिफत।। २६ ।।

जब श्री राजजी महाराज किसी रूह से बात करते हैं तो उसके सभी अंग उमंग से भर जाते हैं। तब श्री राजजी महाराज के अंगों के इश्क की सिफत की बातें रूह से किसी तरह छिपी नहीं रह जातीं।

नेत्र कहे और नासिका, हाथ कहे और मुख।
और अंग सबे याही विध, केहेते बातें दे सब सुख।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज के आंख, नाक, हाथ और मुख का वर्णन किया है। बाकी सभी अंग भी इसी तरह बातें करने में सुख देते हैं।

सब अंग करत इसारतें, हक अंग रूह सों लगन।
ए बारीक बातें अर्स की, कोई जाने जाग्रत मोमिन।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग रूहों से बड़े प्यार के साथ इशारे करते हैं। यह परमधाम की खास (बारीक) बातें हैं, जिन्हें वही मोमिन जानते हैं जो जागृत हो गए हैं।

हक अंग जोत की क्यों कहूं, जो नूर नूर का नूर।
अंग मीठे प्यारे सुख सलूकी, दे हक हुकम सहूर।। २९ ।।

श्री राजजी के अंग की जोत का कैसे वर्णन करूं जो उनके नूरी मुखारबिन्द के नूर की शोभा है। उनके अंग अत्यन्त प्यारे मीठे सुहाने और सुखदायी हैं। यह वही जान सकते हैं जिन्हें श्री राजजी महाराज के हुकम से तारतम वाणी जागृत बुद्धि मिल गई है।

Nijanand App

कैसी मीठी बानी हक की, कहे प्रेम वचन श्री मुख।
निसबत जान रमूज के, देत रूहों को सुख।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज की बोली कितनी मीठी है। श्री राजजी महाराज रूहों को अपनी अंगना जानकर दिल के छुपे इश्क के सुख देते हैं।

हक प्रेम वचन मुख बोलते, जोर आवत है जोस।
ए बानी रूह को विचारते, हाए हाए अजूं उड़े ना फरामोस।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज जब प्रेम के वचन बोलते हैं तो श्री राजजी को बड़ा जोश आ जाता है। इन वचनों का विचार करके भी हाय! हाय! रूह की अभी भी यह फरामोशी उड़ती नहीं है।

जब जोस आवे हक बोलते, प्रेम सों गलित गात।
तिन समें मुख मासूक का, मार डारत निघात।। ३२ ।।

जब श्री राजजी महाराज प्रेम में गलित गात होकर जोश से बोलते हैं तो उस समय वह इश्क के स्वरूप रूहों को चुभने वाली चोट मारता है।

हक अंग सब नाचत, जोस आवत है जब।
करें बातें रूह सों उमंगें, मुख छबि देखी चाहिए तब।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग जब इश्क के जोश में नाचते हैं और रूहों से बड़ी उमंग से बातें करते हैं, उस समय मुख की छबि देखने लायक होती है।

जोस हमेसा हक को, रेहेत सदा पूरन।
पर आसिक देखे इन विध, रंग चढ़ता रस जोबन।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग में इश्क का जोश सदा भरा रहता है, परन्तु आशिक रूहों को वह जोश हर पल अधिक दिखाई देता है।

सरूप मुख नख सिखलों, जोबन जिनस जुगत।
ए आसिक अंग अर्सके, चढ़ती जोत देखत।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप की नख से शिख तक की शोभा और जोबन के जलवों के चढ़ते तेज को, परमधाम की आशिक रूहें ही अर्श के इन अंगों की शोभा देखती हैं।

जोत तेज धात रंग रस, रूह बढ़ता देखे दायम।
अंग अर्स इसी रवेस, यों देखे सूरत कायम।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज की जोत, तेज, धातु, रंग और रस इन सबको भी रूहें चढ़ती शोभा में देखती हैं और श्री राजजी महाराज के अंग भी सदा नित्य नई चढ़ती शोभा के हैं, जिन्हें रूहों की परआतम सदा देखती है।

चढ़ता रंग रस तो कहूं, जो होए नहीं पूरन।
पर आसिक जाने मासूक की, नित चढ़ती देखे रोसन।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग में कोई कमी हो तो चढ़ती-चढ़ती शोभा बताऊं। यह तो आशिक रूहों के देखने की नजाकत है जो अपने माशूक को इस रूप में देखती हैं।

Nijanand App

एही लछन आसिक के, सब चढ़ते देखे रंग।
तेज जोत रस धात गुन, और सब पख इंद्री अंग।। ३८ ।।

रूहों के भी यह लक्षण हैं कि वह अपने माशूक श्री राजजी महाराज के अंगों के तेज, जोश, रस, धातु, गुण और सब पक्ष, गुण, अंग इन्द्रियों में सदा चढ़ती शोभा देखती हैं।

हक रस रंग जोस जोबन, चढ़ता सदा देखत।
अर्स अरवा रूहन को, हक प्रेमें देत लज्जत।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज के चढ़ते जोबन वाले अंगों के रस, रंग और जोश को सदा रूहें चढ़ती देखती हैं। श्री राजजी महाराज अपने परमधाम की रूहों को प्रेम से सुख देते हैं।

घट बढ़ अर्स में है नहीं, हक पूरन हमेसा।
हम इस्कें लें यों अर्स में, सब सुख पूरनता।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज परमधाम में सदा पूर्ण हैं। वहां घट-बढ़ कुछ नहीं होता। हम रूहें परमधाम में इश्क का इस तरह से श्री राजजी से पूर्ण सुख लेती हैं।

बीड़ी लई जिन हाथ सों, सोभित पतली अंगुरी।
तिन बीच जोत नंगन की, अति झलकत हैं मुंदरी।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने जिस हाथ से पान बीड़ा को लिया है, उसकी पतली उंगलियां शोभा देती हैं। उंगलियों के बीच जो मुंदरी पहन रखी है, उनके नगों की जोत जगमगाती है।

बीड़ी मुख में मोरत, सुन्दर हरवटी हंसत।
सोभा इन मुख क्यों कहूं, जो बीच में बात करत।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज पान बीड़ा को जब मुख में चबाते हैं तो उनकी सुन्दर हरवटी हंसती दिखाई देती है। इसी बीच में श्री राजजी महाराज बात करते हैं तो उस समय की मुखारबिन्द की शोभा वर्णन करने से बाहर है।

एक लालक तंबोल की, क्यों कहूं अधुर दोऊ लाल।
दंत सोभित मुख मोरत, खूबी ना इन मिसाल।। ४३ ।।

एक पान की लाली दूसरी होंठों की लाली, उनका कैसे बयान करूं? श्री राजजी महाराज जब पान चबाते हैं तो दांतों की शोभा बेमिसाल हो जाती है।

लाल उज्जल दोऊ रंग लिए, बीड़ी लेत मुख अंगुरी नरम।
नेक मुख मूंदे बोलत, अति सुन्दर मुख सरम।। ४४ ।।

दांत उज्ज्वल हैं; होंठ लाल हैं। इन दोनों के बीच अपनी पतली उंगलियों से मुख में बीड़ी लेकर आरोगते हैं। थोड़ा मुख बन्द करके जब बोलते हैं तो मुख की सुन्दरता और शर्म बढ़ जाती है।

नेक खोलें अधुर मुख बोलत, करें प्यारी बातें कर प्यार।
सो सुख देत आसिकों, जिनको नहीं सुमार।। ४५ ।।

बोलते समय जब होंठों को थोड़ा खोलते हैं तो प्यारी-प्यारी लुभावनी बातें कर आशिकों को बेशुमार सुख देते हैं।

Nijanand App

सुख देत सब अंग मिल, नैन नासिका श्रवन अधुर।
हंसत हरवटी भौं भृकुटी, सब दें सुख बोल मधुर।।४६।।

उस समय श्री राजजी के सभी अंग, नैन, नासिका, कान, होंठ, हंसती हरवटी, भौंहें, भृकुटी सभी मधुर बोली से सुख देते हैं।

अदभुत सलूकी इन समें, आसिक पावत आराम।
आठों जाम हिरदे रूह के, जानों नकस चुभ्या चित्राम।।४७।।

श्री राजजी महाराज की इस समय की अद्‌भुत शोभा देखकर आंशिक रूहों को बड़ा आराम मिलता है और लगता है कि उनके दिल में रात-दिन ऐसी शोभा चुभ गई है।

फेर फेर ए मुख निरखिए, फेर फेर जाऊं बलिहार।
ए खूबी खुसाली क्यों कहूं, इन सुख नाहीं सुमार।।४८।।

ऐसे शोभायुक्त मुख को बार-बार देखने की चाहना होती है और बार-बार मैं उस मुखारबिन्द पर वारी-वारी जाती हूं। इस मुखारबिन्द की खूबी और खुशाली के सुख बेशुमार हैं। कैसे कहूं?

अधबीच आरोगते, मेवा काढ़ देत मुख थें।
सरस मेवा केहे देत हैं, आप हाथ मेरे मुख में।।४९।।

आरोगते समय बीच में अपने मुख से मेवा निकालकर स्वयं श्री राजजी महाराज अपने हाथ से मेरे मुख में दे देते हैं, यह कहते हुए कि यह सबसे मीठा मेवा है।

रंग रस यों केहेत हों, ए जो मेहेर करत मेहेरबान।
ए भूल गैयां हम लाड़ सबे, ना तो क्यों रहे खिन बिन प्रान।।५०।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेहरबान सुभान जिस तरह से लाड़ लड़ाते हैं, मैं उस रस का वर्णन करती हूं। जिस लाड़ को हम सब खेल में आकर भूल गए हैं। वरना बिना प्राण (प्रीतम) के एक क्षण भी संसार में रहा न जाए।

और काम हक को कोई नहीं, देत रूहों सुख बनाए।
वाहेदत बिना हक दिल में, और न कछुए आए।।५१।।

श्री राजजी महाराज को रूहों को सुख देने के सिवाय दूसरा कोई काम नहीं है। श्री राजजी महाराज के दिल में रूहों के सिवाय कुछ और सुहाता नहीं है।

सुख देना लेना रूहों सों, और रूहों सों वेहेवार।
ए अर्स बातें इन जिमिएं, कोई बिना रूह न लेवनहार।।५२।।

रूहों को सुख देना, रूहों से सुख लेना और रूहों से इश्क का व्यवहार करना यही परमधाम की बातें हैं, जो इस संसार में कोई रूहों के सिवाय लेने वाला नहीं है।

कोई काम न और रूहों को, एक जानें हक इस्क।
आठों जाम चौसठ घड़ी, बिना प्रेम नहीं रंचक।।५३।।

रूहों को भी श्री राजजी महाराज के इश्क के बिना और कुछ काम नहीं है। वह आठों जाम (प्रहर) चौसठ घड़ी प्रेम में ही गर्क रहती हैं।

Nijanand App

हक जात वाहेदत जो, छोड़ें ना एक दम।
प्यार करें माहों–माहें, वास्ते प्यार खसम।।५४।।

रूहें (मोमिन) जो श्री राजजी महाराज के अंग हैं, वह श्री राजजी से आपस में अरस-परस प्यार करती हैं और उस प्यार के वास्ते श्री राजजी को एक पल के लिए भी नहीं छोड़तीं।

हक अंग चलत मुख बोलते, तब जान्या जात गुझ प्यार।
ए अरवा अर्स की जानहीं, जाको निसदिन एह विचार।।५५।।

श्री राजजी महाराज जब मुख से बोलते हैं तो उनके सभी अंग चलते दिखाई देते हैं। उस समय ही उनके छिपे प्यार की पहचान होती है, जिसे परमधाम की रूहें जानती हैं, जो रात-दिन इसमें गर्क हैं।

हक नरम पांउं उठाए के, और धरत जिमी पर।
ए अर्स बीच मोमिन जानहीं, जिनको खुसबोए आई फजर।।५६।।

श्री राजजी महाराज अपने कोमल चरण कमलों को जमीन पर रखते हैं तो परमधाम के रहने वाले मोमिन जिनको जागृत बुद्धि से इसकी पहचान हुई है, वह इस सुख को जानते हैं।

हक धरत पांउं उठावत, तब जानी जात चतुराए।
सो समझें हक इसारतें, जो होएं अर्स अरवाए।।५७।।

श्री राजजी महाराज जब चलते हैं, तब उनकी नजाकत भरी चतुराई का पता चलता है। वही इन नजाकतों को जानती हैं, जो परमधाम की रूहें होती हैं।

कैसे लगें पांउं चलते, वह कैसी होसी भोम।
चलते देखे हक चातुरी, हाए हाए घाए न लगे रोम रोम।।५८।।

श्री राजजी महाराज जब चलते हैं तो उनके चरण कमल और भूमि देखने योग्य होती है। श्री राजजी महाराज की इस चतुर चाल को देखकर हाय! हाय! अर्श के मोमिनों के दिल में अभी भी चोट नहीं लगी।

इजार देखत पांउं में, लेत झांई जामें पर।
हाए हाए खूबी इन चाल की, ए जुबां कहे क्यों कर।।५९।।

श्री राजजी महाराज के पांव की इजार की शोभा जामे में झलकती है। हाय! हाय! ऐसी चतुर चाल की खूबी यहां की जबान कैसे कहे?

स्वर भूखन मधुरे सोहे, ए तरह चलत जो हक।
ए जो देखे रूह नजर भर, तो चाल मार डारत मुतलक।।६०।।

श्री राजजी महाराज जब चलते हैं तो आभूषणों के मधुर स्वर निकलते हैं। रूह जब इस चाल को नजर भरकर देख लेती है, तो उसके अन्दर तड़प पैदा हो जाती है।

नख अंगूठे अंगुरियां, चलते अति सोभित।
चाल विचारते अर्स की, हाए हाए अरवा क्यों न उड़त।।६१।।

श्री राजजी महाराज के चलते समय अंगूठे और उंगलियों के नख बहुत शोभा देते हैं। परमधाम की ऐसी चलने की कला को देखकर अरवाहें (रूहें) क्यों नहीं उड़तीं?

Nijanand App

अर्स दिल मोमिन कह्या, ठौर बड़ी कुसाद।
हक हादी रूहें माहें बसें, असल अर्स जो आद।।६२ ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है। यह अर्श दिल बहुत विशाल है। इसमें हक हादी रूहें सब रहते हैं।

जेता मता हक का, सो सब अर्स में देख।
सो सब मोमिन दिल में, पाइए सब विवेक।।६३ ।।

परमधाम में जितनी न्यामतें हैं, उनको सब मोमिनों के दिल में देखो। परमधाम में देखो तब इसका ब्यौरा पता लगेगा।

हक हादी रूहें खेलैं, उठें बैठें दौड़ें करें चाल।
ए जानें अरवाहें अर्स की, जो रेहेत हमेसा नाल।।६४ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें अर्श में खेलते, उठते, बैठते और चलते हैं। परमधाम की जो रूहें हैं, वह सदा श्री राजश्यामाजी के साथ रहती हैं।

जो तोहे कहे हक हुकम, सो तूं देख महामत।
और कहो रूहन को, जो तेरे तन वाहेदत।।६५ ।।

श्री महामतिजी अपनी रूह से कहते हैं, जो तुझे श्री राजजी का हुकम कहे उस पर तू स्वयं चल। फिर जो रूहें अर्श की हैं उनको चलने को कहो। रहनी में आने को बताओ। वह तुम्हारे ही तन हैं।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। १०६४ ।।

हक मासूक का मुख सागर–मंगला चरण

हक इलम के जो आरिफ, मुख नूरजमाल खूबी चाहें।
चाहें चाहें फेर फेर चाहें, देख देख उड़ावें अरवाहें।।१ ।।

जिन रूहों को जागृत बुद्धि का ज्ञान हो गया है, वह सदा श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा बार-बार देखना चाहते हैं और उसे देख-देखकर अपने तन को छोड़ देना चाहते हैं।

एही काम आसिकन का, हक इलम एही काम।
नूरजमाल का जमाल, छोड़ें न आठों जाम।।२ ।।

श्री राजजी महाराज के आशिक रूहों का और उनके इलम का एक यही काम है कि नूरजमाल श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द से रात-दिन कभी जुदा न हों।

खाते पीते उठते बैठते, सोवत सुपन जाग्रत।
दम न छोड़ें मासूक को, जाको होए हक निसबत।।३ ।।

जो मोमिन श्री राजजी की अंगना हैं वह खाते-पीते-उठते-बैठते, सोते, स्वप्न में और जागृत अवस्था में श्री राजजी महाराज के स्वरूप को एक पल भी नहीं छोड़ते।

हक बरनन फेर फेर करें, फेर फेर एही बात।
एही अर्स रूहों खाना पीवना, एही वतन बिसात।।४ ।।

यह मोमिन बार-बार श्री राजजी महाराज के स्वरूप की ही बातें करते हैं। परमधाम की रूहों का यही खाना-पीना और कुल खजाना है।

Nijanand App